

"मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम"

मर्यादा शब्द के भिन्न अर्थ हैं: १) सीमा, २) प्रतिज्ञा, ३) सदाचार, ४) धर्म, ५) नियम, ६) गौरव

श्री राम ने सदा 'मर्यादा' का पालन किया, वे 'मर्यादा' मे रहे और इसी से वे मर्यादित पुरुषों में उत्तम "मर्यादा पुरुषोत्तम" राम कहलाए।

"श्री राम" एक राजकुमार थे और गुरुकुल में अन्य सभी शिष्यों की भाँति ही उन्होंने गुरुकुल के नियमों का पालन करते हुए शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने अपने राजकुमार होने का लाभ नहीं लिया और न ही किन्हीं विशेष सेवाओं अथवा सम्मान की अभिलाषा की। गुरुकुल की मर्यादा को बनाए रखा।

गुरु वशिष्ठ के अनुरोध पर श्री राम ऋषि विश्वामित्र जी के साथ ऋषि-मुनियों के तप में राक्षसों द्वारा पड़ते विघ्न को रोकने के लिए अल्पायु में ही निकल पड़े। "श्री राम" गुरुकुल का कठिन जीवन बिताने के पश्चात अपने राज-ग्रह में थे जहाँ उन्हें सभी संसारिक सुख-सुविधाएँ उपलब्ध थीं। वे राजा दशरथ से आग्रह कर सेना को ऋषि विश्वामित्र के साथ भेज सकते थे और स्वयं राजमहल में रहते हुए सुख भोग सकते थे। परन्तु उन्होंने ऋषि-मुनियों की रक्षा को राज-धर्म मानते हुए अपने व्यक्तिगत सुखों की तुलना में अधिक महत्त्व दिया और राज-धर्म की मर्यादा को नहीं छोड़ा।

यह राजा का दायित्व है कि ऋषि-मुनि भी राज्य की अन्य प्रजा की भाँति सुरक्षित जीवन व्यतीत कर सकें, उन्हें कोई कष्ट न हो जिससे वे भी समाज के प्रति अपने दायित्व, अपने धर्म को निभा सकें। सेना को भेज कर भी राक्षसों से ऋषि-मुनियों की रक्षा की जा सकती थी परन्तु एक राजकुमार जो संभवतः उस राज्य का राजा बनेगा वह गुरु की आज्ञा का उल्लंघन कैसे कर सकता है? जब प्रजा का एक वर्ग कष्ट में हो तो वह सुखी कैसे रह सकता है? प्रजा के प्रति राजा का समर्पण, राज-परिवार का समर्पण उनकी मर्यादा है, प्रजा की अपेक्षा है और यह समर्पण ही राजा को व उसके परिवार को प्रजा में स्वीकार्य व लोक-प्रिय बनाता है।

राजा दशरथ के ऋषि विश्वामित्र से यह कहने पर कि वे उनके साथ सेना भेज देते हैं श्री राम ने पिता की आज्ञा पिता के कथन से असमर्थन व्यक्त किया और उन्हें राजा की मर्यादा का स्मरण कराते हुए स्वयं पूर्ण दायित्व से राज-धर्म का पालन किया। यहाँ हमें एक सीख और मिलती है कि परिवार से ऊपर और चाहे वह परिवार राज-परिवार ही क्यों न हो, राज्य है, राज-धर्म है। (हिन्दुओं में संसारिक जीवन के लिए राज्य सर्वोपरि है। विदुर नीति में भी कहा है:-

त्यजेत कुलार्थं पुरुषं ग्रामस्यार्थं कुलं त्यजेत ।
ग्रामं जनपदस्यार्थं आत्मार्यं पृथिवीं त्यजेत ॥

(कुल को बचाने के लिए यदि किसी व्यक्ति का त्याग करना पड़े तो कर दो। ग्राम को बचाने के लिए यदि परिवार का, कुल का त्याग करना पड़े तो कर दो। राज्य को बचाने के लिए यदि ग्राम का त्याग आवश्यक हो जावे तो ग्राम की आहुति उचित है। पर आत्म-उन्नति के लिए यदि राज्य क्या पृथ्वी का भी त्याग करना पड़े तो कर देना चाहिए अर्थात् मृत्यु भी स्वीकार कर लेनी चाहिए परन्तु अपने कर्तव्य से कभी भी विमुख नहीं होना चाहिए ताकि आत्मा का पतन न हो।)

माता सीता के स्वयंवर में आमंत्रित राजाओं से धनुष नहीं टूट पाया और श्री राम ने सरलता से धनुष तोड़ दिया। धनुष तोड़ने के बाद भी श्री राम ने घमंड नहीं दिखाया। वे सदाचारी, शिष्ट, निर्मल, सौम्य रहे। एक राजकुमार ने भरी सभा में वह कर दिया था जो कोई अन्य नहीं कर पाया था। वह राजकुमार उस प्रतियोगिता में सबसे श्रेष्ठ था पर उसने अपनी श्रेष्ठता नहीं दर्शाई, मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। अपने कर्म से अपनी श्रेष्ठता व्यक्त करने वाले राजकुमार ने शब्दों की मर्यादा कभी भी भंग नहीं की।

माता कैकेयी ने राजा दशरथ से २ वरदान माँगे थे:

१. युवराज राम के स्थान पर पुत्र भरत को राजा बनाया जाए और
२. युवराज राम को राज्य के बाहर १४ वर्षों के लिए वन में वास करना हो

किसी सामान्य जन के साथ यदि ऐसा हो तो उसके मन में अपने माता-पिता के प्रति कितनी घृणा, कितना द्वेष भाव जावे। तनिक सोचें कि ऐसे व्यक्ति की मनोस्थिति कैसी होगी? आज हम एक छोटी सी हानि होने पर विचलित हो

आदित्य साहनी

Maryada Purushotam Shri Ram

The word Maryada has different meanings: 1) limit, 2) vow, 3) virtue, 4) dharm, 5) rules, 6) dignity, pride

Shri Ram always adhered to 'Maryada', in the true sense of its meanings and hence was called the best among men 'Maryada Purushottam' Ram.

"Shri Ram" was a prince. In Gurukul (school), he considered himself one among all the other all the other disciples. Neither did he take any advantage of him being a prince nor did he desire any special services or honors or enjoyed any privileges. He maintained the dignity of the Gurukul.

At the request of Guru Vasishth, Shri Ram left along with sage Vishwamitr at a very young age to stop the disturbance caused by demons in the daily rituals of the sages. Shri Ram was living in a palace having all the worldly comforts after a comparably difficult life of Gurukul. He could have insisted that king Dashrath send the army along with the sage Vishwamitr and could have enjoyed the comforts of palace. But he considered the protection of sages more important than his own personal pleasures and did not give up the dignity of Raj-Dharm.

It is the responsibility of the king that even sages and monks lead a safe life without any fear and sufferings so that they too can fulfill their obligation towards society. The sages and monks could have been protected from the demons by sending the army, but how can a prince who may possibly become the king of that kingdom violate the Guru's command? When a section of people is in trouble, how can he be happy? The dedication and commitment of the king, of the royal family towards their countrymen is their duty, and is also the expectation of the people and this dedication only makes the king and his family acceptable to public.

Overcome by fatherly emotions king Dasharath offered to send the forces with sage Vishwamitr rather than sending Shri Ram. Shri Ram disagreed on this and reminded his father the duties and responsibilities of the king. Here we learn that the state and duties toward the state are above the family even if it is a royal family. (For Hindus, the state is paramount for worldly life. It is also said in the Vidur Niti: -

tyjet kulaarthe purusham graamasyaarthe kulam tyjet
graamam janpadasyaarthe aatmaarthe prithvim tyjet

(If you have to sacrifice a person to save a family, do it. If you have to sacrifice the family, to save the village, do it. If the sacrifice of the village becomes necessary to save the state, then "Aahuti" of the village is appropriate. But if the worldly achievements have to be denounced for the sake of self improvement (upliftment of the soul) even death should be accepted without being distracted from ones duties and responsibilities).

The bow could not be broken by the kings invited to the Swayamvar of Mata Sita but Shri Ram easily broke the bow. Even after breaking the bow, Shri Ram did not show pride but was virtuous, gentle, humble and serene. Although Shri Ram was the best in that competition he did not show his superiority rather kept his humility. The prince never breached the dignity of words but was famed superior because of his deeds.

Mata Kaikeyi asked King Dasharath for 2 boons:

1. her son Bharat should be made king instead of crown prince Ram
2. Ram should be exiled for 14 years

If this were to happen to a common man, then much hatred,

जाते हैं। कुछ लोग तो आत्महत्या तक कर लेते हैं। श्री राम माता कैकेयी के पिता से माँग वरदानों को स्वीकार करते हैं और पुत्र-धर्म का पालन करते हैं। वे माता-पिता के वचनों की मर्यादा रखते हुए कहते हैं कि वन में एकांत में उन्हें ऋषि-मुनियों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलेगा जिससे उनकी आत्म-उन्नति होगी। श्री राम आत्म-उन्नति की तुलना में संसारिक साम्राज्य को त्यागना ही उचित पाते हैं।

प्रजा को, एक राजा चाहिए जिसका चुनाव योग्यता के आधार पर, राजा, मंत्री-गण, गुरु-गण करते हैं और भरत के रूप में राजा का चयन सही है अथवा नहीं इसका निर्णय श्री राम राजा दशरथ, मंत्री-गण, गुरु-गण पर छोड़ते हैं। वे इन सबकी योग्यता का सम्मान करते हैं और अपनी सीमाएँ नहीं लाँघने की मर्यादा दिखाते हैं। श्री राम अपने अनुज भरत को अपने ही समान राजा बनने योग्य समझते हैं और किसी भी प्रकार से अपने अनुज को तुच्छ, छोटा, अयोग्य दर्शाने का प्रयास नहीं करते हैं।

एक क्षण में ही इन संसारिक उपलब्धियों के खो जाने से जो कदाचित् व्यथित न हो, समाज की दृष्टि में अपने साथ अन्याय करने वाले माता-पिता से जो वैर न करे, द्वेष न करे अपितु उनके वचनों की मर्यादा की रक्षा करे, वह मर्यादा पुरुषोत्तम है। वह जो अपने साथ प्रजा-शक्ति होते हुए भी, शक्ति का संतुलन अपनी ओर होते हुए भी अपने स्वार्थ के लिए विद्रोह न करे अपितु राज्य की, राज-धर्म की मर्यादा का ध्यान रखे, वह मर्यादा पुरुष है। वह जो वनवास जाते समय अयोध्यावासियों से आग्रह करे कि वे भरत के प्रति भी वही व्यवहार रखें जैसा कि वे उसके प्रति रखते थे, नगरवासी व समस्त प्रजा भरत और उनमें कोई अंतर न करें और भरत को भी वही प्रेम व सम्मान देवें, वह पुरुषोत्तम है। वह जो वनवास के अंतराल में वनवास के कठिन नियमों की मर्यादा रखें और कदाचित् अपने राज-परिवार का होने का लाभ न उठावे, वह जो सदैव उचित-अनुचित की मर्यादा रखे, वह जो प्रत्येक जीव-जंतु की योग्यता को गौरवान्वित करे, वही महापुरुष, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम हैं।

हम न भूलें कि

- श्री राम जो कहते थे वह करते भी थे। उनकी कथनी व करनी में अंतर नहीं था। यदि आप राम भक्त हैं तो जैसा कहते हैं वैसा ही करें। आपकी भी करनी व कथनी में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। ऐसा होना ही आपके कर्म और आत्म-चेतना का समन्वय होगा।
- श्री राम का जीवन नैतिकता व मर्यादा से जीवन को सौंदर्यपूर्ण बनाने की कला से अवगत करता है।
- हमारे जीवन में इच्छाएं, धन व पुण्य सभी का महत्त्व है। श्री राम जी का चरित्र हमें बताता है कि हम सदा यह आत्मनिरीक्षण करें कि कहीं इन तीनों की उपलब्धि के लिए हम सही व उचित कर्तव्य, उत्तरदायित्व व हित की उपेक्षा न कर दें जो हमें शाश्वत सुख से वंचित कर दें।
 - श्री राम बाली का सहयोग ले कर रावण का नाश कर सकते थे और सीता माता को वापिस ला सकते थे पर उन्होंने अपनी कार्य-सिद्धि के लिए एक अधर्म का सहयोग नहीं लिया अपितु उसका वध किया। (देखें: हम न भूलें-07)
 - सुग्रीव और रावण को मारने के बाद भी श्री राम ने उनके राज्य या धन-संपदा से कुछ नहीं लिया, उस पर अपना अधिकार नहीं जताया। उन्होंने बाली व विभीषण को योग्य आँक (धर्मनूसार शासन करने वाले) उन्हें ही राजा नियुक्त करना सही व उचित माना।
- श्री राम जी का जीवन कार्य-सिद्धि व आत्म-उन्नति के लिए मानवीय प्रयासों को दर्शाता है जो सफलता प्राप्त करवाते हैं। भाग्य से अवसर मिल सकता है, सफलता नहीं (कर्म के बिना गति (उद्धार) नहीं है)।
- एक सामान्य मनुष्य के लिए कठिन प्रतीत होने वाली घड़ी में भी, जब ऐसा लगे कि सब कुछ नष्ट हो रहा है श्री राम हमें सिखाते हैं कि अपनी आत्म-उन्नति का मार्ग कभी भी समाप्त नहीं होता।
- श्री राम का पूरा जीवन हमारे लिए एक आदर्श है और उनके जीवन से हम बहुत सीख सकते हैं। उनके चरित्र में वे सभी गुण हैं जिनकी आकांक्षा संभवतः प्रत्येक व्यक्ति करता है पर मर्यादा पुरुषोत्तम वह अपने सभी नैतिक दायित्वों को पूरा करने पर ही हो सकता है।
- दर्शन शब्द के अर्थों में १) देखना, २) भेंट, ३) साक्षात्कार अर्थों के अतिरिक्त एक अर्थ "वह शास्त्र, जिसमें तत्व-ज्ञान हो" (अंग्रेजी में फिलॉसफी) भी है। "श्री राम-दर्शन" वास्तव में उनके जीवन का अवलोकन करना व उससे तत्व-ज्ञान अर्जन करना है न कि उनकी मूर्ति अथवा तस्वीर को देखना और उसकी भव्यता की प्रशंसा करना।

२१.०४.२०२१

anguish and anger would have been inflicted on his parents. Today we get distracted even due to small losses. Some people even commit suicide. Shri Ram accepts the boons demanded by Mata Kaikeyi and obeys the son-dharm. To keep the dignity of parent's words, Shri Ram saw the solitude in the forest as an opportunity to gain knowledge from sages for spiritual enrichment. Shri Rama found it better to renounce the worldly kingdom for spiritual enrichment.

A king is chosen by the ruling king in consultation with ministers and learned people of the court on the basis of merit. Shri Ram left the decision of whether Bharat is capable or not to the court and did not exceed his limits. Shri Ram considers his younger brother Bharat to be equally capable king as himself and does not in any way attempt to make him appear trivial or unworthy.

The one who is not disturbed by the sudden loss of worldly achievements, is not swayed by the injustice of parents as per the society, but continues to respect the dignity of their words is "Maryada Prushottam". Despite having the support of the people, the one who does not revolt for his own gain, but takes care of the dignity of the state, abides by the state duties is "Maryada Purush". The one who while going to exile, urges the Ayodhya people to support Bharat and treat him with same love and respect as they would treat him, is Ram. The one who does not take advantage of being a royal to avoid the difficulties of exile is "Maryada Prushottam", the one who respects the boundaries of being right and brings glory to every living being is Maryada Purushottam Shri Ram.

Let us not forget that

- Shri Ram was a man of his words, there was no difference between his words and his actions. If you are a devotee of Ram, do as you say. This will be the coordination of your karm and self-consciousness.
- Shri Ram's life reveals the art of making life aesthetically with morality and dignity.
- Desires, money and virtue are all important in our life. The character of Shri Ram ji tells us that we should always introspect and should not neglect the right and proper duty, responsibility lest we are deprived of eternal happiness.
 - With the help of Bali, Shri Ram could have defeated Ravan and brought back Sita Mata, but he did not take the help of an unrighteous for his accomplishment instead killed him. (see: Hum Naa Bhooleen-07)
 - Even after killing Bali and Ravan, Shri Ram did not take their kingdom or wealth, he did not assert his authority over them. He considered Sugriv and Vibhishan as worthy (those who rule according to Dharm) to appoint them as kings.
- The life of Shri Ram ji shows the human efforts for accomplishment and self-progress leads to success. Luck can lead to opportunity, not success (without karm there is no salvation).
- Even in unfavourable circumstances when it seems everything is being destroyed Shri Ram's life teaches us that the path of self-progress never ends.
- Shri Ram's entire life is a model for us. His character has all the qualities that every person would possibly aspire for but one can be "Maryada Purushottam" only after fulfilling all his moral obligations.
- Apart from the popular meanings of the word "Darshan" i.e. seeing, offering and visit the quintessential meaning is "the scripture, which has the essence of knowledge" (Philosophy in English). "Shri Ram-Darshan" in essence is to observe his life and acquire knowledge from it, rather than seeing his idol or picture and admiring its grandeur.

21.04.2021